**Subject specific syllabus**

**Sanskrit**

### खण्ड क गद्य) साहित्य परिचय -, पद्य एवं नाटक(

- निम्न ग्रन्थों के निर्धारित अंकों के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियों के भावार्थ, शब्द का व्याकरणात्मक टिप्पणी, चरित्र चित्रण, तथा ग्रन्थकर्ता के परिचय:
- कादम्बरी, (कथामुखम(, नलचम्पू प्र)थम उच्छवास(, शिशुपाल बधमप्र) थम सर्गी, अभिज्ञान् शाकुन्तलम और मृच्छकटिकम, गद्यकाव्य, खण्डकाव्य, महाकाव्य एवं नाटयकाव्य के उदभव  और विकास का सामान्यस परिचय।

### खण्ड ख  संस्कृत वाडमय में -प्रतिविम्बित भारतीय दर्शन

इस खण्ड में श्रीमद्भागवद्गीता, तर्क भाषा, साख्यकारिका तथा वेदांतसार के अनुसार प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों का सामान्य परिचय।

### खण्ड ग  काव्यशास्त्र

(साहित्य दर्पण एवं काव्य प्रकाश के अनुसार), काव्य लक्षण प्रयोजन, शब्दावृतियाँ, ध्वनि, रस एवं निम्नलिखित अलंकारों का परिज्ञान  अनुप्रास, यमक श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, शभ्रान्तिमानू, अतिशयाक्ति, स्वभोक्ति विरोभास ताि परिसंख्या।

### खण्ड घ  भाषा विज्ञान एवं व्याकरण

भाषा का उद्भव एवं विकास, ध्वनि परिवर्तन तथा अर्थपरिवर्तन, सभी गुणों की प्रतिनिधि धातुओं का दसों लकारों में रूप (लघु सिद्धांत कौमुदी के आधार पर) सिद्धांत कौमुदी के आधार पर सभी कारकों, विभक्तियों एवं समास का प्रक्रियात्मक ज्ञान।

निम्नलिखित प्रत्यों का प्रयोगात्मक ज्ञान-कृत-तव्यत, अनीयर, यत् धंश तृत ........ क्त, क्तवतु, कत्वा, ल्ययू, शत् शानूच, तुमुन तद्धित अक क्युप, मयुप, ढक, ढकी, फक, ख, यत् एवं छास्त्री प्रत्यय  टाप डप्र, डीप डीन। विशेष  उक्त प्रत्यय लघुसिद्धांत कौमुदी के आधार पर प्रेष्टव्य हैं।

### खण्ड ड  रचना एवं पारिभाषिक पद

(क) संस्कृत सुभाषित एवं सूक्तियों का परिज्ञान, अशुद्धि परिमार्जन और वाक्य परिवर्तन।

(ख) नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।